बल्लबगढ़ नरेश महाराजा नाहर सिंह जी के 156वें बलिदान दिवस पर शत-शत नमन

आज दिन है बल्लबगढ़ की रियासत और दिल्ली के रिश्ते को याद करने का, क्योंकि आज 9 जनवरी है, वो 9 जनवरी जब महाराजा नाहर सिंह जी को 1858 में धोखे से चांदनी चौक पर फांसी तोड़ दिया गया था| उनके जन्म परिचय पर कवि की कुछ पंक्तियाँ:

बल्लबगढ़ की रियासत के म्ह, बहुत पुराणा सिंही गाम,

तेवतिया था गोत वीर का, बलराम सिंह पिता का नाम!

जाटवंश म्ह जन्मे नाहर सिंह, सब बातां के थे सुखधाम,

हरियाणा की रजधानी (दिल्ली) बचाणे, अवतारया जाटणी नैं जाम!!

1857 की क्रांति में जितने भी नाम चमके उनमें कोई अंग्रेजों द्वारा उनकी रियासतें जब्त कर लेने से मुखर हो कर तो कोई अंग्रेजों से अपनी रियासत बचाने हेतु लड़ा| इनमें एक अकेला शहीद ऐसा था जो अपनी रियासत से आगे आ बहादुरशाह जफ़र के आग्रह पर दिल्ली को बचाने के लिए लड़ा था और इस क्रांति का अकेला ऐसा योद्धा था जिसके आगे अंग्रेजों को संधि के लिए सफ़ेद झंडा उठाना पड़ा था, संधि-वार्ता का सन्देश भेजना पड़ा था| क्योंकि उसने रोहतक से ले गाज़ियाबाद तक दिल्ली की सीमा ऐसे सील कर दी थी कि अंगेज इस ओर पूरे चार महीने तक पाँव नहीं रख पाये थे| जबकि दूसरी ओर का मोर्चा खापवीर बाबा शाहमल तोमर जी ने सम्भाला था| भरतपुर और धोलपुर की अजेय रियसतों के बाद बल्लबगढ़, हरियाणा ऐसी रियासत रही जिसने अंग्रेजों के सूरज को संधि करने को मजबूर किया था| आज बलिदानों की धरती के उसी बांकुरे सपूत बल्लबगढ़ नरेश महाराजा नाहर सिंह जी का बलिदान दिवस है; उनके अदम्य जौहर और शौर्य के लिए उनकी शहादत को शत-शत नमन!

आज ही के दिन 9 जनवरी 1858 को अंग्रेजों ने उनके एजेंट गंगाधर कौल की बदौलत यह कहलवा कर कि अब अंग्रेजों ने हथियार डाल दिए हैं, धोखे से दिल्ली में बुलवा 'चांदनी चौक' पर फांसी तोड़ दिया था| गंगाधर चाहते तो देशभक्ति दिखा सकते थे और महाराजा जी को अंग्रेजों के चंगुल में फंसाने की जगह उनका साथ दे, अंग्रेजों को दिल्ली से उखाड़ने में मदद कर सकते थे, लेकिन उनको दूसरा रास्ता पसंद आया| और इस मदद के बदले अंग्रेजों ने गंगधार कौल को दिल्ली की सूबेदारी सौंपी थी| आगे चलकर इन्हीं का पोता देश का प्रधानमंत्री भी बना|

बल्लबगढ़ रियासत की दिल्ली में कितनी दुदुम्भी बोलती थी इसका आभास इसी बात से लगाया जा सकता है कि महाराजा नाहर सिंह के पिता महाराज बलराम उर्फ़ बल्लू पर कहावत चलती थी कि

"गाती थी यही दिल्ली सारी, डग-डग पे बल्लू जाट का राज!

हिन्दू-मुस्लिम की एकता, यही था उसके सपनो का समाज!!"

धन-धन हैं ऐसे जननी के जाए और मातृभूमि के रक्षक!

महाराजा नाहर जी की वीरता पर कुरुक्षेत्र विश्वविधालय द्वारा रचित एक ऐसी प्रस्तुति जिसको सुनकर तन-मन गर्व से पुलकित हो उठता है - https://www.youtube.com/watch?v=FXotx8e-k88

हरियाणवी कला जगत के जाने-माने नाम जगबीर राठी द्वारा महाराजा जी को समर्पित एक और प्रस्तुति - https://www.youtube.com/watch?v=bAYdD2WLSY4

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

09/01/14